



Anika Chauhan

30 Dec 2022

05:14 AM

Hardwar

Model: All-Dosha-Report

Order No: 120503301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 29-30/12/2022
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 05:14:00 घंटे
इष्ट _____: 55:03:43 घटी
स्थान _____: Hardwar
राज्य _____: Uttarakhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 29:58:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:09:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:56:36 घंटे
वेलान्तर _____: -00:01:54 घंटे
साम्पातिक काल _____: 11:30:14 घंटे
सूर्योदय _____: 07:12:30 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:26:28 घंटे
दिनमान _____: 10:13:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 14:03:33 धनु
लग्न के अंश _____: 16:28:32 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: उ०भाद्रपद - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: वरियान
करण _____: विष्टि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: झ-झनक
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1944	पौष	9
पंजाबी	संवत : 2079	पौष	15
बंगाली	सन् : 1429	पौष	14
तमिल	संवत : 2079	मार्गड़ी	15
केरल	कोल्लम : 1198	धनु	15
नेपाली	संवत : 2079	पौष	15
चैत्रादि	संवत : 2079	पौष	शुक्ल 8
कार्तिकादि	संवत : 2079	पौष	शुक्ल 8

पंचांग

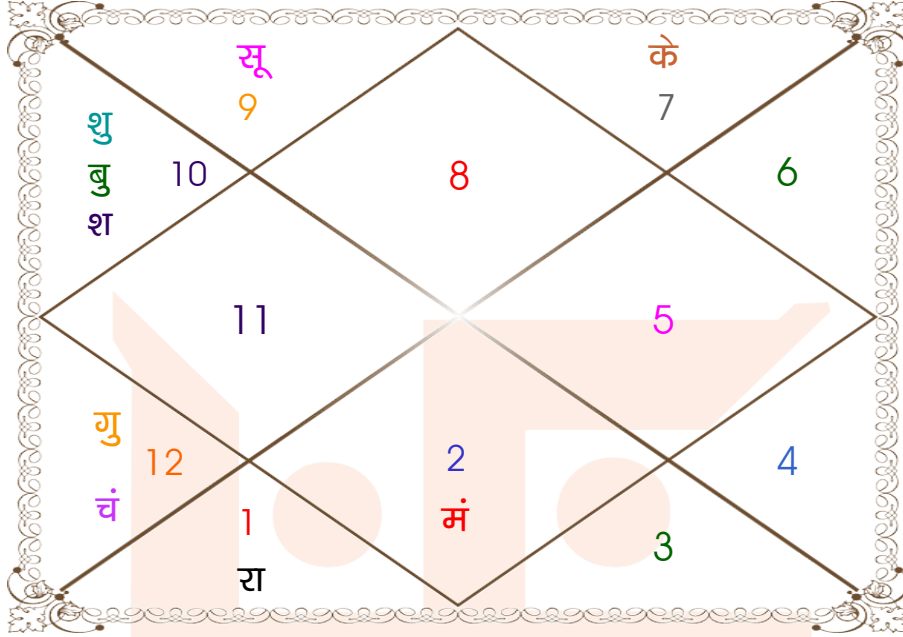
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति काल _____ : 19:17:28
जन्म तिथि _____ : 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 11:43:40 घंटे
जन्म योग _____ : उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____ : व्यतिपात
योग समाप्ति काल _____ : 11:45:22 घंटे
जन्म योग _____ : वरियान
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 07:55:38 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 43:45:51
भभोग _____ : 59:11:05
भोग्य दशा काल _____ : शनि 4 वर्ष 10 मा 22 दि

घात चक्र

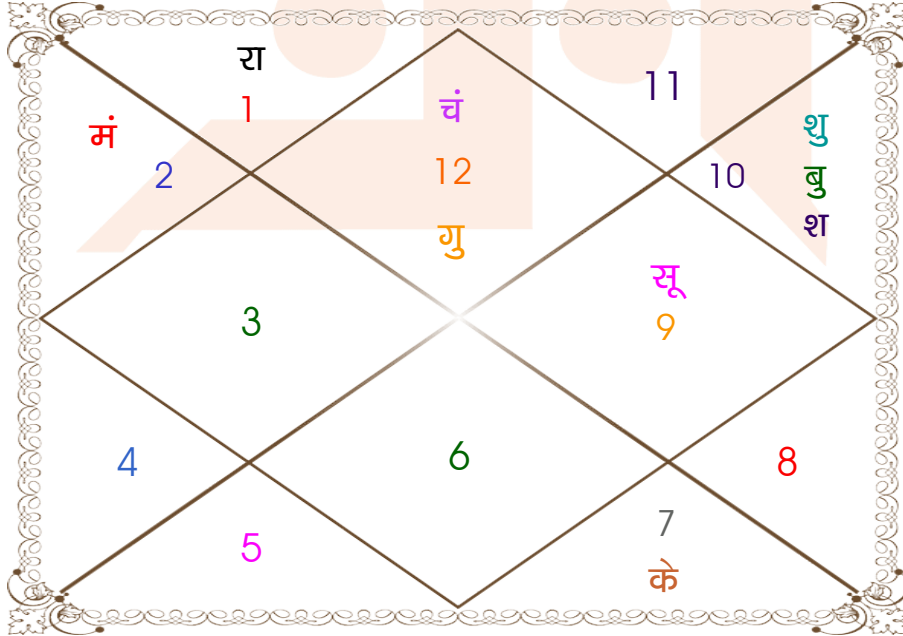
मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मृग
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Bhagwati jyotish anusandhan Kendra Acharya Tripurari Jha

Samay Singh enclave khedali Bahadrabad Haridwar, Uttarakhand, India

9627295790

tripurarijha100@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

गु चं	रा	मं	
श बु शु			
सू	ल	के	

लग्न कुण्डली

मं	रा	गु चं
		श बु शु
के	ल	सू

विंशोत्तरी
शनि 4वर्ष 10मा 22दि
शनि

30/12/2022

22/11/2128

शनि	22/11/2027
बुध	21/11/2044
केतु	22/11/2051
शुक्र	22/11/2071
सूर्य	21/11/2077
चन्द्र	22/11/2087
मंगल	22/11/2094
राहु	22/11/2112
गुरु	22/11/2128

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 3मा 13दि
उल्का

13/04/2024

14/04/2030

उल्का	14/04/2025
सिद्धा	14/06/2026
संकटा	14/10/2027
मंगला	14/12/2027
पिंगला	13/04/2028
धान्या	13/10/2028
भ्रामरी	13/06/2029
भद्रिका	14/04/2030

Bhagwati jyotish anusandhan Kendra Acharya Tripurari Jha

Samay Singh enclave khedali Bahadrabad Haridwar, Uttarakhand, India

9627295790

tripurarijha100@gmail.com

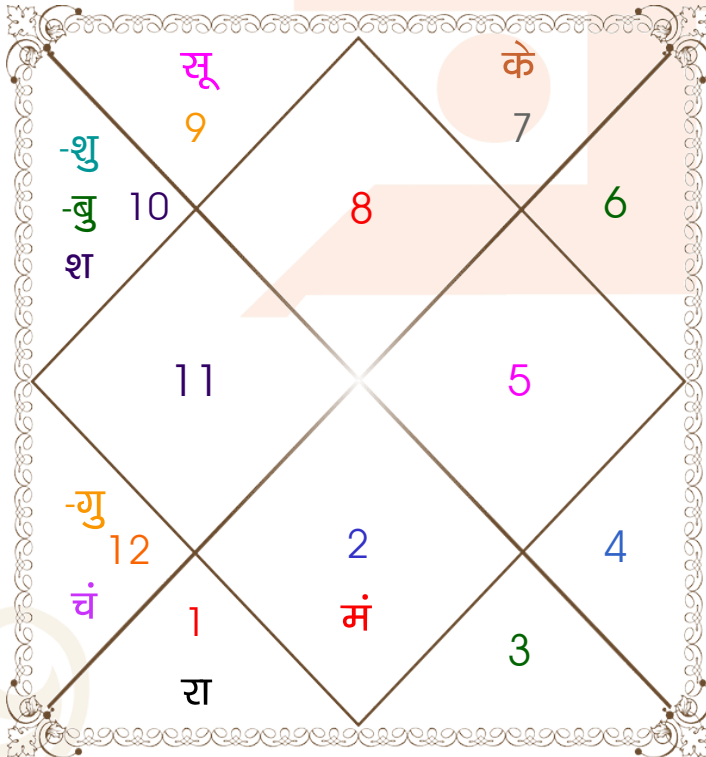
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	16:28:32	309:41:10	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
सूर्य			धनु	14:03:33	01:01:09	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			मीन	13:13:52	13:25:08	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	राहु	सम राशि
मंगल	व		वृष	15:14:21	00:11:14	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	सम राशि
बुध	व		मक	00:08:54	00:06:44	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	सम राशि
गुरु			मीन	06:46:50	00:06:55	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	स्वराशि
शुक्र			मक	00:41:17	01:15:11	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	मित्र राशि
शनि			मक	28:02:41	00:05:53	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	स्वराशि
राहु			मेष	17:33:17	00:00:06	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	मंगल	शत्रु राशि
केतु			तुला	17:33:17	00:00:06	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	सम राशि
हर्ष	व		मेष	21:00:40	00:01:12	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	---
नेप			कुंभ	28:39:51	00:00:53	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
प्लूटो			मक	03:25:09	00:01:53	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
दशम भाव			सिंह	27:43:14	--	उ०फाल्गुनी	--	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	--

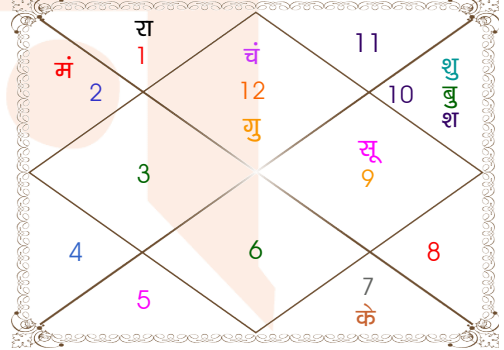
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:10:31

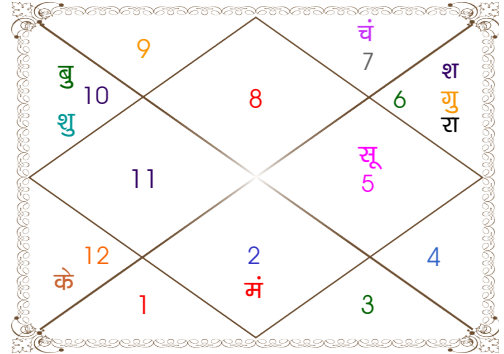
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 03:20:59	वृश्चिक 16:28:32
2	धनु 03:20:59	धनु 20:13:26
3	मकर 07:05:53	मकर 23:58:20
4	कुम्भ 10:50:47	कुम्भ 27:43:14
5	मीन 10:50:47	मीन 23:58:20
6	मेष 07:05:53	मेष 20:13:26
7	वृष 03:20:59	वृष 16:28:32
8	मिथुन 03:20:59	मिथुन 20:13:26
9	कर्क 07:05:53	कर्क 23:58:20
10	सिंह 10:50:47	सिंह 27:43:14
11	कन्या 10:50:47	कन्या 23:58:20
12	तुला 07:05:53	तुला 20:13:26

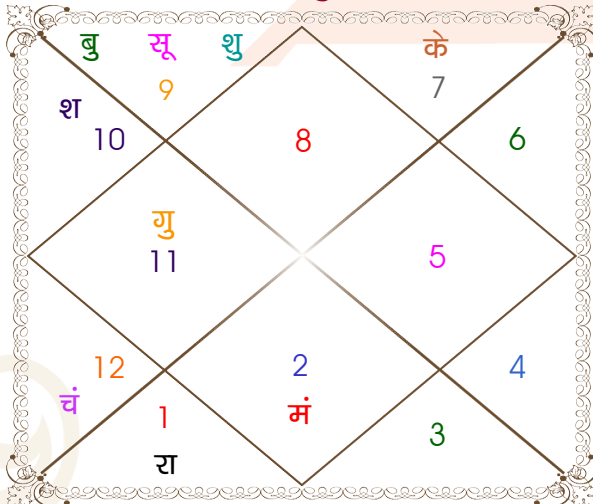
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	16:28:32
2	धनु	17:56:14
3	मकर	22:48:44
4	कुम्भ	27:43:14
5	मीन	28:22:27
6	मेष	23:58:24
7	वृष	16:28:32
8	मिथुन	17:56:14
9	कर्क	22:48:44
10	सिंह	27:43:14
11	कन्या	28:22:27
12	तुला	23:58:24

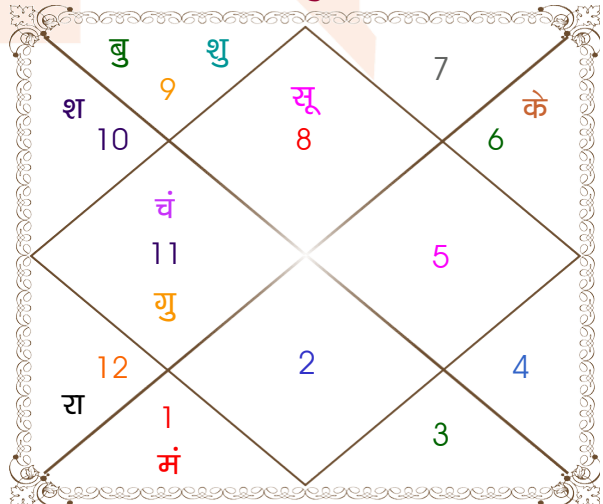
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



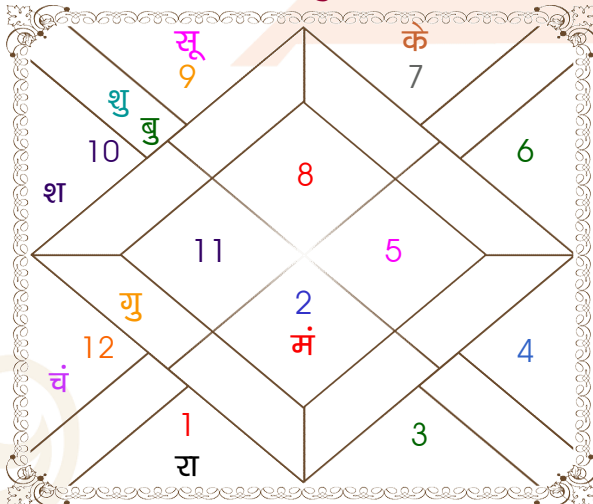
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भातृ	पितृ	युवा	मुदित	भोजन	4.75	37 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	शक्त	भोजन	3.26	64 %
मंगल	अमात्य	भातृ	युवा	शान्त	गमन	1.01	40 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	शक्त	गमन	1.04	33 %
गुरु	पुत्र	धन	वृद्ध	स्वस्थ	कौतुक	3.60	41 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	मृत	मुदित	कौतुक	4.16	25 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	स्वस्थ	उपवेशन	3.41	45 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	खल	गमन	0.00	20 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	शान्त	कौतुक	0.00	20 %
कुल						21.23	

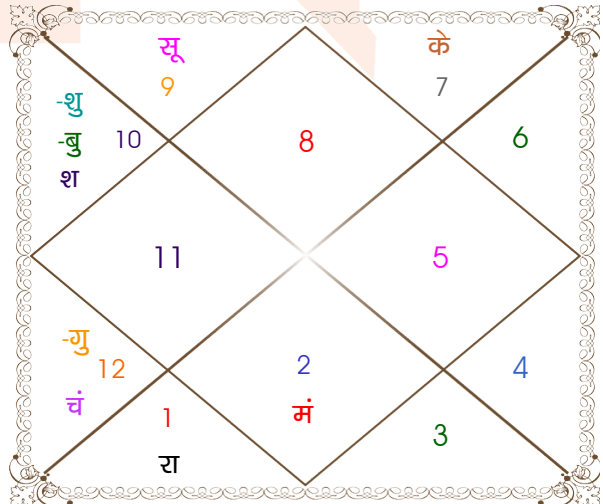
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 4 वर्ष 10 मास 22 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
30/12/2022	22/11/2027	21/11/2044	22/11/2051	22/11/2071
22/11/2027	21/11/2044	22/11/2051	22/11/2071	21/11/2077
00/00/0000	बुध 19/04/2030	केतु 19/04/2045	शुक्र 23/03/2055	सूर्य 10/03/2072
00/00/0000	केतु 17/04/2031	शुक्र 19/06/2046	सूर्य 23/03/2056	चंद्र 09/09/2072
00/00/0000	शुक्र 15/02/2034	सूर्य 25/10/2046	चंद्र 21/11/2057	मंगल 15/01/2073
00/00/0000	सूर्य 22/12/2034	चंद्र 26/05/2047	मंगल 21/01/2059	राहु 10/12/2073
00/00/0000	चंद्र 22/05/2036	मंगल 22/10/2047	राहु 21/01/2062	गुरु 28/09/2074
00/00/0000	मंगल 20/05/2037	राहु 09/11/2048	गुरु 21/09/2064	शनि 10/09/2075
30/12/2022	राहु 07/12/2039	गुरु 16/10/2049	शनि 22/11/2067	बुध 16/07/2076
राहु 11/05/2025	गुरु 14/03/2042	शनि 25/11/2050	बुध 22/09/2070	केतु 21/11/2076
गुरु 22/11/2027	शनि 21/11/2044	बुध 22/11/2051	केतु 22/11/2071	शुक्र 21/11/2077

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
21/11/2077	22/11/2087	22/11/2094	22/11/2112	22/11/2128
22/11/2087	22/11/2094	22/11/2112	22/11/2128	00/00/0000
चंद्र 22/09/2078	मंगल 19/04/2088	राहु 04/08/2097	गुरु 10/01/2115	शनि 26/11/2131
मंगल 23/04/2079	राहु 07/05/2089	गुरु 28/12/2099	शनि 24/07/2117	बुध 05/08/2134
राहु 22/10/2080	गुरु 13/04/2090	शनि 04/11/2102	बुध 29/10/2119	केतु 14/09/2135
गुरु 21/02/2082	शनि 23/05/2091	बुध 24/05/2105	केतु 04/10/2120	शुक्र 13/11/2138
शनि 22/09/2083	बुध 19/05/2092	केतु 11/06/2106	शुक्र 05/06/2123	सूर्य 26/10/2139
बुध 20/02/2085	केतु 16/10/2092	शुक्र 11/06/2109	सूर्य 24/03/2124	चंद्र 27/05/2141
केतु 21/09/2085	शुक्र 16/12/2093	सूर्य 06/05/2110	चंद्र 24/07/2125	मंगल 06/07/2142
शुक्र 23/05/2087	सूर्य 23/04/2094	चंद्र 05/11/2111	मंगल 29/06/2126	राहु 31/12/2142
सूर्य 22/11/2087	चंद्र 22/11/2094	मंगल 22/11/2112	राहु 22/11/2128	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 4 वर्ष 11 मा 12 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु 11/05/2025 22/11/2027	बुध - बुध 22/11/2027 19/04/2030	बुध - केतु 19/04/2030 17/04/2031	बुध - शुक्र 17/04/2031 15/02/2034	बुध - सूर्य 15/02/2034 22/12/2034
गुरु 11/09/2025 शनि 04/02/2026 बुध 16/06/2026 केतु 08/08/2026 शुक्र 10/01/2027 सूर्य 25/02/2027 चंद्र 13/05/2027 मंगल 06/07/2027 राहु 22/11/2027	बुध 25/03/2028 केतु 16/05/2028 शुक्र 09/10/2028 सूर्य 22/11/2028 चंद्र 04/02/2029 मंगल 27/03/2029 राहु 06/08/2029 गुरु 01/12/2029 शनि 19/04/2030	केतु 11/05/2030 शुक्र 10/07/2030 सूर्य 28/07/2030 चंद्र 27/08/2030 मंगल 17/09/2030 राहु 11/11/2030 गुरु 29/12/2030 शनि 24/02/2031 बुध 17/04/2031	शुक्र 06/10/2031 सूर्य 27/11/2031 चंद्र 21/02/2032 मंगल 22/04/2032 राहु 24/09/2032 गुरु 09/02/2033 शनि 23/07/2033 बुध 16/12/2033 केतु 15/02/2034	सूर्य 02/03/2034 चंद्र 28/03/2034 मंगल 15/04/2034 राहु 01/06/2034 गुरु 12/07/2034 शनि 30/08/2034 बुध 13/10/2034 केतु 31/10/2034 शुक्र 22/12/2034
बुध - चंद्र 22/12/2034 22/05/2036	बुध - मंगल 22/05/2036 20/05/2037	बुध - राहु 20/05/2037 07/12/2039	बुध - गुरु 07/12/2039 14/03/2042	बुध - शनि 14/03/2042 21/11/2044
चंद्र 03/02/2035 मंगल 05/03/2035 राहु 22/05/2035 गुरु 30/07/2035 शनि 20/10/2035 बुध 01/01/2036 केतु 31/01/2036 शुक्र 27/04/2036 सूर्य 22/05/2036	मंगल 13/06/2036 राहु 06/08/2036 गुरु 23/09/2036 शनि 20/11/2036 बुध 10/01/2037 केतु 31/01/2037 शुक्र 01/04/2037 सूर्य 19/04/2037 चंद्र 20/05/2037	राहु 06/10/2037 गुरु 08/02/2038 शनि 05/07/2038 बुध 14/11/2038 केतु 07/01/2039 शुक्र 12/06/2039 सूर्य 28/07/2039 चंद्र 14/10/2039 मंगल 07/12/2039	गुरु 26/03/2040 शनि 05/08/2040 बुध 30/11/2040 केतु 17/01/2041 शुक्र 04/06/2041 सूर्य 15/07/2041 चंद्र 22/09/2041 मंगल 10/11/2041 राहु 14/03/2042	शनि 17/08/2042 बुध 03/01/2043 केतु 01/03/2043 शुक्र 12/08/2043 सूर्य 30/09/2043 चंद्र 21/12/2043 मंगल 17/02/2044 राहु 13/07/2044 गुरु 21/11/2044
केतु - केतु 21/11/2044 19/04/2045	केतु - शुक्र 19/04/2045 19/06/2046	केतु - सूर्य 19/06/2046 25/10/2046	केतु - चंद्र 25/10/2046 26/05/2047	केतु - मंगल 26/05/2047 22/10/2047
केतु 30/11/2044 शुक्र 25/12/2044 सूर्य 01/01/2045 चंद्र 14/01/2045 मंगल 22/01/2045 राहु 14/02/2045 गुरु 05/03/2045 शनि 29/03/2045 बुध 19/04/2045	शुक्र 29/06/2045 सूर्य 21/07/2045 चंद्र 25/08/2045 मंगल 19/09/2045 राहु 22/11/2045 गुरु 18/01/2046 शनि 26/03/2046 बुध 26/05/2046 केतु 19/06/2046	सूर्य 26/06/2046 चंद्र 06/07/2046 मंगल 14/07/2046 राहु 02/08/2046 गुरु 19/08/2046 शनि 08/09/2046 बुध 26/09/2046 केतु 04/10/2046 शुक्र 25/10/2046	चंद्र 12/11/2046 मंगल 24/11/2046 राहु 26/12/2046 गुरु 24/01/2047 शनि 26/02/2047 बुध 29/03/2047 केतु 10/04/2047 शुक्र 16/05/2047 सूर्य 26/05/2047	मंगल 04/06/2047 राहु 26/06/2047 गुरु 16/07/2047 शनि 09/08/2047 बुध 30/08/2047 केतु 08/09/2047 शुक्र 03/10/2047 सूर्य 10/10/2047 चंद्र 22/10/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु 22/10/2047 09/11/2048	केतु - गुरु 09/11/2048 16/10/2049	केतु - शनि 16/10/2049 25/11/2050	केतु - बुध 25/11/2050 22/11/2051	शुक्र - शुक्र 22/11/2051 23/03/2055
राहु 19/12/2047 गुरु 08/02/2048 शनि 09/04/2048 बुध 02/06/2048 केतु 24/06/2048 शुक्र 27/08/2048 सूर्य 16/09/2048 चंद्र 18/10/2048 मंगल 09/11/2048	गुरु 24/12/2048 शनि 16/02/2049 बुध 06/04/2049 केतु 26/04/2049 शुक्र 21/06/2049 सूर्य 08/07/2049 चंद्र 06/08/2049 मंगल 26/08/2049 राहु 16/10/2049	शनि 19/12/2049 बुध 14/02/2050 केतु 10/03/2050 शुक्र 16/05/2050 सूर्य 06/06/2050 चंद्र 09/07/2050 मंगल 02/08/2050 राहु 02/10/2050 गुरु 25/11/2050	बुध 15/01/2051 केतु 05/02/2051 शुक्र 06/04/2051 सूर्य 25/04/2051 चंद्र 25/05/2051 मंगल 15/06/2051 राहु 08/08/2051 गुरु 25/09/2051 शनि 22/11/2051	शुक्र 12/06/2052 सूर्य 12/08/2052 चंद्र 21/11/2052 मंगल 31/01/2053 राहु 02/08/2053 गुरु 11/01/2054 शनि 23/07/2054 बुध 11/01/2055 केतु 23/03/2055
शुक्र - सूर्य 23/03/2055 23/03/2056	शुक्र - चंद्र 23/03/2056 21/11/2057	शुक्र - मंगल 21/11/2057 21/01/2059	शुक्र - राहु 21/01/2059 21/01/2062	शुक्र - गुरु 21/01/2062 21/09/2064
सूर्य 11/04/2055 चंद्र 11/05/2055 मंगल 01/06/2055 राहु 26/07/2055 गुरु 13/09/2055 शनि 10/11/2055 बुध 31/12/2055 केतु 22/01/2056 शुक्र 23/03/2056	चंद्र 12/05/2056 मंगल 17/06/2056 राहु 16/09/2056 गुरु 06/12/2056 शनि 13/03/2057 बुध 07/06/2057 केतु 12/07/2057 शुक्र 22/10/2057 सूर्य 21/11/2057	मंगल 16/12/2057 राहु 18/02/2058 गुरु 16/04/2058 शनि 22/06/2058 बुध 22/08/2058 केतु 16/09/2058 शुक्र 26/11/2058 सूर्य 17/12/2058 चंद्र 21/01/2059	राहु 05/07/2059 गुरु 28/11/2059 शनि 19/05/2060 बुध 22/10/2060 केतु 25/12/2060 शुक्र 25/06/2061 सूर्य 19/08/2061 चंद्र 18/11/2061 मंगल 21/01/2062	गुरु 31/05/2062 शनि 01/11/2062 बुध 19/03/2063 केतु 15/05/2063 शुक्र 24/10/2063 सूर्य 12/12/2063 चंद्र 02/03/2064 मंगल 28/04/2064 राहु 21/09/2064
शुक्र - शनि 21/09/2064 22/11/2067	शुक्र - बुध 22/11/2067 22/09/2070	शुक्र - केतु 22/09/2070 22/11/2071	सूर्य - सूर्य 22/11/2071 10/03/2072	सूर्य - चंद्र 10/03/2072 09/09/2072
शनि 23/03/2065 बुध 03/09/2065 केतु 10/11/2065 शुक्र 21/05/2066 सूर्य 18/07/2066 चंद्र 23/10/2066 मंगल 29/12/2066 राहु 21/06/2067 गुरु 22/11/2067	बुध 16/04/2068 केतु 16/06/2068 शुक्र 05/12/2068 सूर्य 26/01/2069 चंद्र 22/04/2069 मंगल 22/06/2069 राहु 24/11/2069 गुरु 11/04/2070 शनि 22/09/2070	केतु 17/10/2070 शुक्र 27/12/2070 सूर्य 17/01/2071 चंद्र 21/02/2071 मंगल 18/03/2071 राहु 21/05/2071 गुरु 17/07/2071 शनि 22/09/2071 बुध 22/11/2071	सूर्य 27/11/2071 चंद्र 06/12/2071 मंगल 13/12/2071 राहु 29/12/2071 गुरु 13/01/2072 शनि 30/01/2072 बुध 15/02/2072 केतु 21/02/2072 शुक्र 10/03/2072	चंद्र 26/03/2072 मंगल 05/04/2072 राहु 03/05/2072 गुरु 27/05/2072 शनि 25/06/2072 बुध 21/07/2072 केतु 31/07/2072 शुक्र 31/08/2072 सूर्य 09/09/2072

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

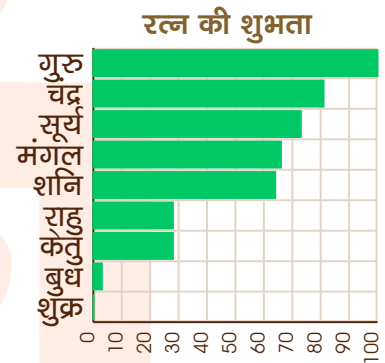
मूलांक	3
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	सन्तति सुख, धन
मोती	चंद्र	81%	सन्तति सुख, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	73%	धन, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	66%	दम्पति, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	64%	पराक्रम, सुख
गोमेद	राहु	28%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
लहसुनिया	केतु	28%	व्यय, पराक्रम हानि
पन्ना	बुध	3%	पराक्रम हानि, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	22/11/2027	61%	69%	53%	16%	100%	12%	76%	41%	3%
बुध	21/11/2044	80%	69%	66%	28%	100%	12%	64%	28%	28%
केतु	22/11/2051	61%	69%	72%	3%	100%	12%	51%	3%	52%
शुक्र	22/11/2071	61%	69%	66%	16%	100%	25%	70%	41%	41%
सूर्य	21/11/2077	86%	88%	72%	3%	100%	0%	51%	3%	3%
चंद्र	22/11/2087	80%	94%	66%	16%	100%	0%	64%	3%	3%
मंगल	22/11/2094	80%	88%	78%	0%	100%	0%	64%	3%	41%
राहु	22/11/2112	61%	69%	53%	3%	100%	12%	70%	52%	3%
गुरु	22/11/2128	80%	88%	72%	0%	100%	0%	64%	28%	28%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/01/2023-29/03/2025	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
अशुभ
सम

क्षेत्र

सुख
सन्तति
शत्रु से कष्ट
दुर्घटना से बचाव
कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष समाप्त हो जाता है अतः ऐसा मंगल आपको अधिकांशतया शुभ फल ही प्रदान करेगा। फलतः आपका एवं आपके पति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। पति के स्वभाव में उग्रता का समावेश हो सकता है। लेकिन इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुखोपभोग के साधनों को अर्जित करेंगी एवं धन धान्य से युक्त रह कर सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

यद्यपि आपके लिए यह मंगल शुभ फल दायक रहेगा परन्तु आपके विवाह में इसके कारण विलम्ब हो सकता है लेकिन विवाह अत्यन्त ही शान्ति पूर्ण ढंग से सम्पन्न होगा। आपको किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के उपरान्त आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही पति के स्वभाव में यदा कदा क्रोधाधिक्य की प्रवृत्ति उत्पन्न होगी जिससे अल्प समय के लिए आपस में तनाव तथा कटुता के संबंध उत्पन्न होंगे। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल स्थित होने से आप पति के रूप में किसी योग्य पुरुष को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अपने दाम्पत्य जीवन को प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप अपने कार्य क्षेत्र में प्रायः सफलता एवं उन्नति प्राप्त करेंगी तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगी। लग्न पर दृष्टि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा क्रोध के भाव की प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। साथ ही द्वितीय भाव पर दृष्टि होने से आपका परिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प समय के लिए परिवारिक वातावरण में तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

इसके अतिरिक्त विद्या अध्ययन में आप हमेशा सफल रहेंगी एवं इस विषय में आप को किसी भी प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप शान्ति एवं सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक पुरुष या ऐसे मंगली पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसका मंगली दोष उचित नियम के अनुसार भंग हो रहा हो। ऐसे उचित पुरुष से दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करके आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगी तथा आनन्द पूर्वक समस्त आवश्यक सुखों का उपभोग करेंगी। एक भाग्यशाली महिला के रूप में सुखैश्वर्य से सम्पन्न तथा धनधान्य से युक्त रहकर प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली में मिलान के समय यदि पुरुष की कुण्डली में सप्तम भाव में ही मंगल स्थित हो तो उसकी यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भाव में मांगलिक होने से आप लोगों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा। अतः दाम्पत्य सुख के उपभोग में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होंगे। साथ ही अन्य भावों में मंगल स्थित यदि दोष मुक्त हो रहा हो तो दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। इस प्रकार यदि आप सावधानी पूर्वक मिलान करके वर का चुनाव करेंगी तो सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक यात्रा बहुत करता है पर आंशिक रूप में ही सफलता मिलती है। कभी रोग व्याधि जातक के शरीर में लग जाती है, जिसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक का जीवन मानसिक रूप से थोड़ा बहुत परेशान रहता है एवं शोक दुःख आदि भी घेर लेता है। जातक को प्रेम प्रसंग में विशेष रूप से सफलता नहीं मिलती है। मनोभिलाषित पत्नी प्रायः नहीं मिलती। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का चरित्र थोड़ा सन्देहास्पद रहता है। जातक के मन में आंशिक रूप से निराशा की भावना जागृत हो उठती है और अपने मन में दूसरों के प्रति शत्रुता पालकर रखने वाला होता है। धर्म की आंशिक क्षति होती है। जातक कभी-कभी बुरा स्वप्न भी देखता है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक राजदण्ड का कभी भागीदार बन जाता है। जातक का जीवन शत्रुओं के षड्यन्त्र से घिरा रहता है और उस षड्यन्त्र में आंशिक रूप से शत्रुओं की विजय होती है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को थलसेना में नहीं जाना विशेष रूप से हितकर है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक एक अच्छा दलील देने वाला एवं वकालत करने वाला तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।

आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं हैं। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता है। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता है। उस भाव के फलों का नाश करता है। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता है। उस भाव के फलों की हानि होती है। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय है। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता है।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विच्छेद का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविच्छेद का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता है।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता है। मगर इन संघर्षों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा है।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते हैं, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते हैं। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन

भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्मसमय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यता वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं। इनमें शारीरिक बल की प्रचुरता रहती है अतः परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग में सम्माननीय समझे जाते हैं। ये अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं तथा आत्मिक शक्ति की भी इनमें प्रबलता रहती है। धन संग्रह के प्रति भी इनकी रुचि रहती है तथा धर्नाजन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित में इनकी विशेष रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में उनको सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट महिला होंगी तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगी इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। निर्भीकता तथा लगनशीलता का भी भाव आप में विद्यमान होगा। अतः कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। विज्ञान गणित या मेडिकल के क्षेत्र में आप विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित कर सकते हैं। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। धनसंग्रह में भी आपके रुचि होगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग असुविधा महसूस करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भावना से नहीं बल्कि बुद्धि द्वारा संचालित होंगे। अतः सामान्य रूप से आप प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि के प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगी मानसिक शांति भी बनी रहेगी। पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान होगा तथा इन गुणों से आप अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगी। इससे आप धनैश्वर्य अर्जित करेंगी तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिनका आप आनंदपूर्वक उपभोग करेंगी परन्तु यदा कदा तेजस्विता के स्थान पर उग्रता या क्रोध का असमय प्रदर्शन करेंगी। इससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानियां उत्पन्न होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव अवश्य रहेगा परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगी। मित्र वर्ग में आप लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बलवान पराक्रमी तेजस्वी धनसंग्रह कर्ता एवं परिश्रमी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम से जीवन में इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता

पूर्वक उनका उपभोग करेंगी ।



Bhagwati jyotish anusandhan Kendra Acharya Tripurari Jha

Samay Singh enclave khedali Bahadrabad Haridwar, Uttarakhand, India

9627295790

tripurarijha100@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी ग्रह बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी महिला होंगी तथा अपने विचारों को सामाजिक जनों के समक्ष बिना किसी हिचकिचाहट के प्रस्तुत करेंगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके इनको उचित समाधान करेंगी। सत्य के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपको जो अच्छा लगता है बिना किसी की परवाह किए हुए अपनी बात को कह देती है। उसका अन्य जनों पर क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में इसे ग्रहण करेंगे इसकी आप चिन्ता नहीं करेंगी।

अपने मित्रों एवं संबंधियों से आपके औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु समयानुसार घनिष्ठ संबंध स्थापित करने की भी उत्सुक रहेंगी। आपका पारिवारिक जीवन शान्त एवं सुखमय रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर तथा ओजस्वी होगी तथा इस के द्वारा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही सांसारिक धन ऐश्वर्य एवं वैभव से भी युक्त रहेंगी तथा धार्मिक एवं शुभ कार्य कलापों को सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन की स्वामिनी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी महिला होंगी। साथ ही रस युक्त पदार्थ आपके प्रिय रहेंगे। समाज में धर्म की उन्नति के लिए आप अपना सहयोग हमेशा प्रदान करती रहेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सासंसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपके पास आधुनिक सुख संसाधनों की बहुलता रहेगी। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली महिला होंगी तथा समाज में भी आपका यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगी।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपको आवश्यकता प्राप्त होगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगी। इससे आपके ऐश्वर्य तथा वैभव में वृद्धि होगी तथा परिश्रमी एवं पराक्रमी स्वभाव होने के कारण अन्यत्र से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करेंगी। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से शीघ्र एवं विशिष्ट लाभ के योग बनते हैं। अतः अचल सम्पत्ति पर ही अधिक निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सामान्य रूप से आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से परिपूर्ण होगा तथा इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप यथोचित प्रबंध करेंगी। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगी तथा युवावस्था से ही इसका उपभोग करेंगी।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा वह भौतिकतावादी भी होगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आप वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति कर सकती हैं। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी सुख दुःख में उनको पूर्ण सहयोग देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेंगी लेकिन स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा करें तो यह आपके लिए उत्तम रहेगा तथा उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आपको तकनीकी पाठ्य क्रम पर ही विशेष केन्द्रित रहना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी वृहस्पति है तथा चन्द्रमा भी लग्नेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा आपके समस्त कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे अन्य सामाजिक लोग बांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगी। आप में शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता भी होगी एवं कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र के प्रति आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। आपका आधुनिक विज्ञान, कविता साहित्य एवं संगीत के प्रति भी आकर्षण होगा तथा अवसरानुकूल इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। इससे आपकी विद्वता तथा सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में मन के कारक चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा इनसे आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। साथ इस क्षेत्र में आप यदा-कदा भावुकता का भी परिचय देंगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं आर्दशवाद से युक्त होगा तथा इसकी परिणति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र की अपेक्षा कन्याएं अधिक होंगी। आपकी संतति बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति तथा सफलताएं अर्जित करेगी। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव होगा एवं सामान्यतया उनकी आज्ञापालन में तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष आत्मिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के सहयोग से ही करना अधिक सुविधा जनक समझेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली महिला समझी जायेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में संतोष जनक प्रदर्शन करेगी। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगी तथा आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगी। इसके साथ ही आपकी संतति चतुर व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य कलापों को सम्पन्न करने वाली होगी जिससे अन्य सामाजिक लोग भी उनसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा मंगल भी सप्तम भाव को अपनी स्थिति से प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। मंगल के प्रभाव से वह पराक्रमी साहसी, तेजस्वी तथा व्यावहारिक होता है। अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के होंगे परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। भौतिकता के प्रति भी उनकी रुचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होंगे। अपने महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगे। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे।

आपके पति देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगे तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं शरीर भी बलिष्ठ होगा जिससे उनके व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगे। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रुचिशील होंगे तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगे।

सप्तम भाव में मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे। परन्तु पति की तेजस्वी प्रवृत्ति के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव तथा आपस में मतभेद भी उत्पन्न होंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में मायके से आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा उनसे नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष श्रद्धा भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा नहीं करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके तीक्ष्ण स्वभाव एवं कटु सभाषण से अप्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। अतः साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सिंह राशि अग्नितत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। कार्यक्षेत्र में आप सामान्यतया उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी तथा नवीन आयाम स्थापित करने में सफल होंगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए प्रशासकीय सेवा, औषधिविज्ञान सरकारी कर्मचारी, कम्प्यूटर साइंस, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत - विज्ञान, पर्यटन (पर्वतीय) क्षेत्र, उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। साथ ही वैज्ञानिक शोध क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकती हैं। अतः सतत उन्नति एवं लाभ के लिए आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही आजीविका का चयन करना चाहिए। इससे उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए औषधि व्यापार, ऊनी वस्त्र, रत्न संबंधी कार्य, विद्युत एवं मैकेनिकल उपकरण, इंजीनियरिंग उपकरण, पर्यटन केंद्र का स्वामित्व, सरकारी ठेके आदि से लाभ एवं प्रचुर मात्रा में धन अर्जित होगा। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार को प्रारंभ करेंगी तो इससे आपको इच्छित उन्नति की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों एवं वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।

जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगी। साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे इससे आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं में भी किसी सम्माननीय सदस्या या पदाधिकारी के रूप में कार्य कर सकती हैं। इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी योग्य एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा साथ ही सामाजिक जनों के कल्याणकारी कार्यों के करने में भी समर्थ होंगे। आपके प्रति उनके मन में अपनत्व का भाव होगा तथा उच्चस्तर पर शिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा उनके प्रभाव एवं सहयोग से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी साथ ही आप भी पिता के सम्मान वृद्धि के लिए परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु पंचम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि पंचम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि नवम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि अष्टम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व पत्नी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

14 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादश एवं द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी और आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं बड़े भाई का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 30 मई के बाद चतुर्थस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें धन का व्यय सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

30 मई के बाद चतुर्थ स्थान का राहु आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। अचानक परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। आपके

माता पिता एवं पुत्र का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा और आप भी मानसिक रूप अशान्त व तनावग्रस्त रहेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में पंचम स्थान का राहु संतान संबंधित चिन्ताएं दे सकता है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। बच्चों को सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है।

दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। 14 मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय गर्भवती स्त्रियों को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहे।

परन्तु 14 मई के बाद का समय आपके स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरु वायु तत्व राशि में होने कारण सांस, संक्रामक रोग व पेट संबंधित बीमारियों से कष्ट दे सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता की उम्मीद कम ही है। 14 मई के बाद उच्च शिक्षा में रुकावटें भी आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु कुछ समय और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि छोटी मोटी यात्रा कराती रहेगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का घ से दूर स्थानान्तरण हो सकता है।

यह स्थानान्तरण आपके लिए अनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी

करेंगे। मई के बाद अधिक व्यस्तता के कारण पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- नित्य प्रति सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार को काली वस्तुओं का दान करें एवं गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन पीली वस्तुएं जैसे केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटें और व्रत रखें।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अष्टम स्थान का गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बना रहा है अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने कार्य व्यवसाय में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करना चाहिए। आपके कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए सावधानी बरतें।

02 जून के बाद कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें आपका भाग्य साथ देगा। व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद दशमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी पदोन्नति भी होगी और आपको कार्यस्थल पर मान-सम्मान भी प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ-साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

02 जून के बाद नवम स्थान का गुरु आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। आप इच्छित बचत कर पायेंगे। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। आप बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उनकी बीमारी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

02 जून के बाद समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई-बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति में मददगार होगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके बच्चों की उच्च शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। प्रथम संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

02 जून के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य के कारण पढ़ाई में व्यवधान बना रहेगा।

02 जून से इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा के लिए समय काफी अच्छा है। तकनिकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। बेरोजगार जातकोंको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। 02 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है। 31 अक्टूबर के बाद आपकी जन्म भूमि की यात्रा भी हो सकती है या पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से साधना, योग या मन्त्र सिद्धि के प्रति आप अधिक समर्पित होंगे। 02 जून के बाद आप किसी को गुरु बना कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष तृतीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपको कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपका भाग्य आपके साथ है इसलिए आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ेगा।

जून के बाद समय अति उत्तम है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। आपके कार्य व्यवसाय में समस्त शत्रुओं का दमन होगा। इस समय के अंतराल में आपके ब्राण्ड को पहचान भी लि सकती है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को भी लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। धन की अनुकूलता के कारण आप खर्च भी अधिक करेंगे। 26 नवम्बर के बाद अचानक आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी, जिससे आप आर्थिक स्थिति को और भी सुदृढ़ करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। परिवार में

परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अति उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गर्भाधान के लिए बहुत ही शुभ समय चल रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है, क्योंकि भाग्य साथ नहीं देगा। अपने मेहनत के बल पर ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करना पड़ेगा। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद मौसम जनित बीमारी से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है परन्तु आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। इस समय नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार आपके लिए लाभप्रद रहेगा। जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठ कर टहलना आपके स्वास्थ्य के लिए अमृत सिद्ध होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। उनको करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी जो अधिक अनुकूल या उन्नति कारक होंगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ एवं अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और उस ज्ञान के माध्यम से परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके कार्य व्यवसाय में विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे। वरिष्ठ लोगों के सहयोग से आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु वे आपका कुछ नहीं कर पाएंगे और आप अपने सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

24 जुलाई से आपका समय और बढ़िया हो रहा है। व्यापार में बढ़ोत्तरी के संकेत हैं। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार के विस्तार के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। लाभ में निरन्तरता बनी रहेगी। फरवरी के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आपको शत्रु पक्ष से धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

24 जुलाई से रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ अनावश्यक व्यय करा सकता है परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। निवेश के मामले में सावधान रहें। भाई-बहन या पुत्र के विवाह अवसर पर भी धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति व सहयोग का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अचानक आपके परिवार में विषमता की स्थिति बन सकती है। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी पड़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान के लिए उत्तम योग बन रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे।

गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह हो सकता है। मार्च से जून तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा उसके बाद फिर से अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे। फरवरी के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 मई के बाद आर्थिक स्थिति को लेकर कुछ चिंताएं हो सकती हैं। द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु छठे स्थान का शनि शीघ्र ही स्वस्थ भी कर देगा। 24 जुलाई से स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकता है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप शत्रुओं को पछाड़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। गुरु ग्रह के प्रभाव से आप सामाजिक कार्यों हेतु यात्राएं कर सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर व तन्त्र-मन्त्र के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- माता-पिता की सेवा करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 29 मार्च के बाद समय और उत्तम हो रहा है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण आप व्यवसाय में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आप कोई नया व्यापार भी शुरू कर सकते हैं और इसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे।

25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वालों को कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। परिवार में खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएँगे। 29 मार्च से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव से आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अनावश्यक खर्च से आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः अभी से कुछ अतिरिक्त धन संचय करें। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिसमें आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अतः अच्छा यही

होगा की अपनी अपने सहन-शक्ति को बढ़ाएं। अन्यथा आपके संबंध खराब हो सकते हैं। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

29 मार्च के बाद घरेलू वातावरण में कुछ अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। वर्षान्त में सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 29 मार्च से गुरु का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है। उस के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। आपको संतानोत्पत्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पढ़ाई-लिखाई भी प्रभावित हो सकती है। संतान को लगातार अथक प्रयास करने के बाद ही सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे और अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

25 अगस्त के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं यकृतजनित बीमारी से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को छोड़कर अपने करियर में आगे रहेंगे। 29 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय और भी अच्छा हो रहा है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती ही रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

25 अगस्त के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको धार्मिक यात्रा भी कराएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को दान देना, भूखे को खाना खिलाना और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। धर्म पत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।